जब अंतर आंखां खुलाई, तब तो बाहेर की मुंदाई।
जब अंतर में लीला समानी, तब अंग लोहू रह्या न पानी।। २२ ।।

जब अन्दर की आंखें खुल जाएंगी और पारब्रह्म का अनुभव हो जाएगा, तो बाहरी दुनियां को देखने वाली दृष्टि बन्द हो जाएगी। जब अन्दर लीला का भाव आएगा, तब संसारी अंग में खून, पानी कुछ नहीं रहेगा अर्थात माया के सब विकार दूर हो जाएंगे।

जब देख्या हांस विलास, गल गया हाड मांस स्वांस।
जब अन्तर आया सुमरन, रह्यों अंग न अंतस्करन।। २३ ।।

जब धनी से हंसी-विनोद का सुख मिलेगा तब हड्डी-मांस गलकर सांस भी खत्म हो जाएगी। जब अंतर में धनी और वतन की याद आएगी, तब अंग में मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार कुछ नहीं रहेगा।

जब याद आयो सुख अखंड, तब रहे न पिंड ब्रह्मांड।
जब चढ़े विकट घाटी प्रेम, तब चैन ना रहे कछू नेम।। २४ ।।

जब अखण्ड सुख याद आएगा, तब यह शरीर और रिश्तेदार सब महत्वहीन हो जाएंगे। जब धनी के प्रेम की मस्ती छा जाएगी, तब नियम कर्म कुछ नहीं रह जाएगा।

महामत कहे सुनो साथ, देखो खोल बानी प्राणनाथ।
धनी ल्याए धाम से वचन, जिनसे न्यारे न होए चरन।। २५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे सुन्दरसाथजी! सुनो और अपने धनी परमधाम से जो वाणी लाए हैं, उसे खोलकर देखो। इन धाम धनी की वाणी से उनके चरण कमल अलग नहीं होंगे।

|| प्रकरण || ७६ || चौपाई || १०३६ ||

राग श्री

वतन बिसारिया रे, छलें किए हैरान।
धनी आप बुध भूलियां, सुध न रही वृद्धि हान।। १ ।।

हे साथजी! माया ने हमें इतना परेशान कर दिया है कि हम अपने घर को ही भूल गए। अपने धनी और अपनी जागृत बुद्धि को भूल गए। यह सुध भी नहीं रही कि किसमें लाभ है किसमें हानि।

ब्रह्मसृष्ट सखियां धाम की, आइयां छल देखन।
जुदे जुदे घर कर बैठियां, खेलें भुलाए दिया वतन।। २ ।।

परमधाम की ब्रह्मसृष्टियां खेल में छल देखने आयीं और अलग-अलग घर बनाकर बैठ गईं तथा मूल घर परमधाम को भुला दिया।

धाम से रब्द करके, हम कब आवें दूजी बेर।
सब भूले सुध हार जीत की, तो मैं कह्या फेर फेर।। ३ ।।

परमधाम से रबद कर के ब्रह्मसृष्टियां अपने प्रेम की परख करने आई हैं। वह यह जानती हैं कि अब हमें दूसरी बार नहीं आना है। वह हार-जीत की सुध ही भूल गई हैं, इसलिए महामतिजी बार-बार समझाते हैं।

मांहों मांहें कई प्रीत रीतसों, खेले हंसें रस रंग।
पेहेचान जिनों को पेड़ की, धनी को रिझावें सेवा संग।। ४ ।।

इनमें से कई सखियां जिन्हें इस माया की पहचान हो गई है वह आपस में प्रेम करके हंसते-खेलते अपने धनी को सेवा से रिझाती हैं।

Nijanand App

कई मिनो मिने काल क्रोध सों, लड़ाई करते दिन जाए।
सेवा धनी न प्रीत सैयन सों, सो डारी आसमान से पटकाए।। ५ ।।

कई सखियां आपस में लड़ाई-झगड़ा करते-करते उम्र गंवा रही हैं। उन्हें अपने धनी की सेवा और सुन्दरसाथ का प्रेम भी भूल गया, इसलिए वह अपनी ऊंची महिमा से नीचे गिर गईं।

कई सेवें धनीय को, करके प्रेम सनेह।
हम सैयों को पेहेचान पेड़ की, होसी धाम में धंन धंन एह।। ६ ।।

कई सुन्दरसाथ धनी की प्रेम से सेवा कर रहे हैं, क्योंकि इन्हें पता चल गया है कि यह माया झूठी है। सच्चे धनी की सेवा में लगकर वे धाम में धन्य-धन्य हो जाएंगे।

कई अवगुन लेवें धनीय का, करें आप भी अवगुन।
नाहीं सनेह सुख साथ सों, यों वृथा खोवें रात दिन।। ७ ।।

कई अपने धनी के अन्दर लौकिक अवगुण ढूंढ़ते हैं और खुद भी अवगुण करने लगते हैं। उन्हें सुन्दरसाथ के प्रेम का सुख नहीं है। वह व्यर्थ में रात-दिन अपना जीवन गंवा रहे हैं।

तुम सूती धनिएं जगाइया, कह्या आगे मौत का दिन।
कई साख पुराई आपे अपनी, तो भी छूटे न दुख अगिन।। ८ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम भूले हुओं को आगे कयामत का दिन बताकर धनी ने जागृत किया और कई प्रकार से गवाहियां भी दिलाईं। फिर भी तुमसे आग के समान लगे माया के दुःख नहीं छूटते।

सुख देखाए वतन के, सो भी कायम सुख अलेखे।
तो भी छल छूटे नहीं, जो आपे आंखें अपनी देखे।। ९ ।।

धनी ने धाम के बेशुमार अखण्ड सुखों को दिखाया। फिर भी अपनी ही आंखों से देखने के बाद भी माया नहीं छूटी।

देख के अवसर भूलहीं, बहोरि न आवे ए अवसर।
जानत हैं आग लगसी, तो भी छूटे ना छल क्योंए कर।। १० ।।

हे साथजी! यह सब देखकर भी समय अपने हाथ से गंवा रहे हो। यह अवसर दुबारा नहीं आने वाला। यह भी जानते हो कि समय निकल जाने से माया की आग लग जाएगी। फिर भी तुमसे अपने मन के विकार नहीं छूटते।

पीछे पछतावा क्या करे, जब गया समया चल।
ऐसे क्यों भूलें अंकूरी, जाके सांचे घर नेहेचल।। ११ ।।

जब समय हाथ से निकल जाएगा तो पीछे पछताने से क्या होगा? परमधाम की अंकूरी ब्रह्मसृष्टियां अपने सच्चे अखण्ड घर को कैसे भूल सकती हैं?

जो जाग बातें करें उमंगसों, सो हंस हंस ताली दे।
जिन नींद दई सुख इंद्रियों, सो उठी उंघाती दुख ले।। १२ ।।

जिन्होंने यहां जागकर अपने धनी और सुन्दरसाथ को पहचान कर सेवा की, वह हंसती हुई बड़ी उमंग से परमधाम में उठेंगी। जिन्होंने अपनी इन्द्रियों के सुख के वास्ते ही समय बिताया, वह नींद भरी आंखों से उठेंगी और शर्मिंदगी से दुःखी होंगी।

Nijanand App

क्या बल केहेसी कायर माया को, जो गए सागर में रल।
सामें पूर जो चढ़या होसी, सो केहेसी तिखाई मोह जल।। १३ ।।

वह कायर जो माया में मग्न होंगे, वह माया की शक्ति का क्या बखान करेंगे? जो माया की रीतियों को उलटकर धनी की तरफ चलेगा तो वही माया की शक्ति को बताएगा।

दे साख धनिऐं जगाइया, दई बिध बिध की सुध।
भांत भांत दई निसानियां, तो भी ठौर न आवे निज बुध।। १४ ।।

धनी ने कई प्रकार की गवाहियां देकर जगाया। तरह-तरह के अखण्ड परमधाम के निशान बताए, फिर भी परमधाम की पहचान नहीं हुई।

महामत कहे जो होवे धाम की, सो पेहेचान के लीजो लाहा।
ले सको सो लीजियो, फेर ऐसा न आवे समया।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जो धाम के सुन्दरसाथ हों, वह इन शब्दों को पहचानकर अखण्ड सुख का लाभ ले सको तो ले लेना नहीं तो दुबारा ऐसा मौका हाथ नहीं आएगा।

॥ प्रकरण ॥ ७७ ॥ चौपाई ॥ १०५१ ॥

राग श्री

सखी री जान बूझ क्यों खोइए, ऐसा अलेखे सुख अखण्ड।
सो जाग देख क्यों भूलिए, बदले सुख ब्रह्मांड।। १ ।।

हे साथजी! ऐसे अखण्ड सुखों को पहचानकर क्यों गंवाते हो? इस ब्रह्माण्ड के सुख झूठे हैं। ऐसा समझकर भी भूलने की गलती क्यों करते हो?

कई कोट राज बैकुंठ के, न आवे इतके खिन समान।
सो जनम वृथा जात है, कोई चेतो सुबुध सुजान।। २ ।।

करोड़ों बैकुण्ठों के राज्य के सुख परमधाम के सुखों के सामने यहां के एक क्षण के समान भी नहीं हैं, इसलिए जान बूझकर अपने जन्म को व्यर्थ में क्यों गवां रहे हो? इसलिए हे साथजी! तुम समझदार हो। सावचेत (सावधान) हो जाओ।

एक खिन न पाइए सिर साटें, कई मोहोरों पदमों लाख करोड़।
पल एक जाए इन समें की, कछू न आवे इन की जोड़।। ३ ।।

लाखों-करोड़ों और पदमों मोहरें खर्च करने पर तथा सिर कटवा देने पर भी एक क्षण की आयु नहीं मिलेगी। इस समय का एक पल भी बड़ा कीमती है और इसकी बराबरी में कुछ भी नहीं है।

इन समें खिन को मोल नहीं, तो क्यों कहूं दिन मास बरस।
सो जनम खोया झूठ बदले, पिउसो भई ना रंग रस।। ४ ।।

जब एक पल की कीमत नहीं हो सकती, तो दिन, महीना और वर्ष की कीमत कैसे कहूं? तुमने झूठी माया के सुखों में जन्म गवां दिया है और धनी की पहचान कर उनका आनन्द नहीं लिया।

Nijanand App